दिनांक 14 अप्रैल, 2017 को बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेदकर की जयंती के अवसर पर माननीया राज्यपाल के अभिभाषण के मुख्य बिन्दुः–

- सर्वप्रथम मैं बाबा साहेब भारतरत्न डा० भीमराव अम्बेदकर को उनकी जयंती के अवसर पर नमन करती हूँ तथा उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ।
- बाबा साहब युगद्रष्टा थे। आज ही के दिन एक दलित परिवार में जम्म लेने वाले इस महापुरूष ने अपने कर्म, योग्यता से देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।
- डा० अम्बेदकर एक चिंतक एवं कर्मयोगी थे। वे समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, विधि और राजनीति विज्ञान के बहुत बड़े जानकार थे। उन्हें विश्व के लगभग सभी देशों के संविधान और कानूनों की जानकारी थी।
- हमारे देश का संविधान विश्व का सबसे विशाल संविधान है। इस पर हमें गर्व है, हम इसे आदर्श संविधान के रूप में मानते हैं और अन्य राष्ट्रों के लिए भी अनुकरणीय कहते हैं। इस सौभाग्य को सुलभ कराने के अहम किरादारों में से एक बाबा साहेब भारतरत्न डा० अम्बेदकर भी थे। आप सभी जानते हैं कि वे संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे।
- उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उनकी वाणी में ऐसी शक्ति थी जिससे पूरा समाज प्रेरित होकर रचनात्मक कार्यों में जुट जाता था। वे सही अर्थ में समाज के प्रेरक एवं मार्गदर्शक थे। उनका दर्शन एवं चिंतन समाज की समस्याओं पर आधारित था तथा उसमें निराकरण एवं निदान हेतु बैचेनी भी झलकती है।

- डा० अंबेदकर ने लोगों का आह्वान किया कि शिक्षित बनो!! संगठित रहो!! संघर्ष करो!! उन्होंने उस समय के समाज में व्याप्त भेद–भाव, छुआ–छूत, अस्पृश्यता को मिटाने के लिए जीवन भर संघर्ष किया।
- आज समाज में दलित व अछूत वर्ग के लोगों को जो सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है, उसका बहुत बड़ा श्रेय निश्चित ही डा० अम्बेदकर को जाता है, क्योंकि उन्होंने आजीवन सामाजिक स्वतंत्रता, समानता व न्याय के लिए संघर्ष किया।
- बाबा साहेब के विचारों का अनुपालन करके हम अपने देश को विकास एवं प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ा सकते हैं एवं समतामूलक समाज का उनका सपना पूरा कर सकते हैं।
- बाबा साहब का सबको शिक्षित होने का संदेश से अभिप्राय सिर्फ साक्षरता से नहीं है, गुणवत्तायुक्त शिक्षा से है। डिग्री हासिल करना ही मकसद नहीं होना चाहिये, सभी ज्ञानवान बनें, इस ओर ध्यान दें। उनके विचारों अज्ञे संदेश को कहाँ तक आत्मसात कर पाये हैं, इस पर मंथन करना चाहिये।
- सभी व्यक्ति संविधान के अनुसार कार्य करें और राज्य एवं राश्ट्र की तीव्र गति से प्रगति में सहयोग प्रदान करें। अभी भी राश्ट्रपिता महात्मा गाँधी और आदरणीय अटल जी के सपनों को पूर्ण करने हेतु और अथक प्रयास करने की जरूरत है।

जय हिन्द!  जय झारखंड!